फिदेल कास्त्रो कौन थे?

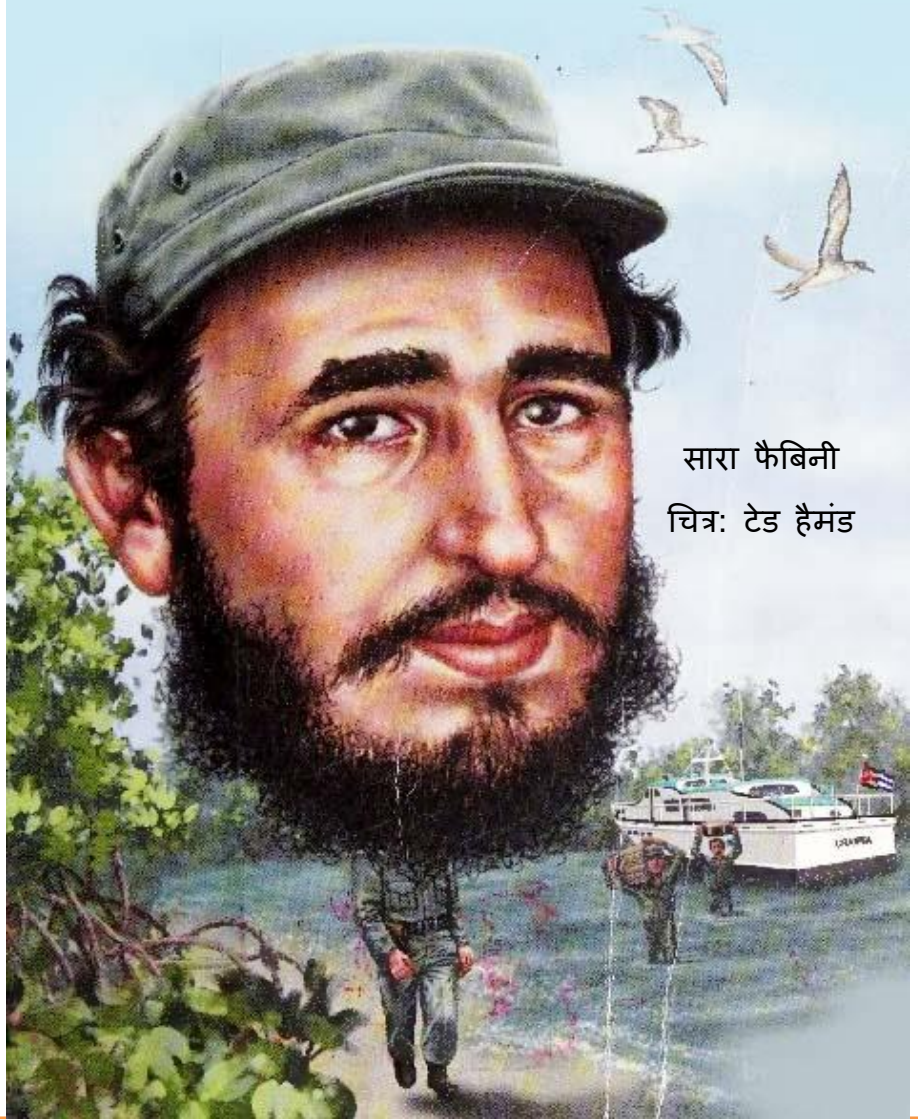

सारा फैबिनी

चित्र: टेड हैमंड

फिदेल कास्त्रो कौन थे?

सारा फैबिनी

चित्र: टेड हैमंड

विषयवस्तु

फिदेल कास्त्रो कौन थे?

खुशहाल अमीर बचपन

छात्र दिवस

अच्छे उद्देश्य वाला विद्रोही

अनुयायी से नेता तक

जेल!

आज़ादी!

चिरायु फिदेल

योजनाओं से कार्रवाई तक

मित्र और शत्रु

कठिन काल

फिदेल ने पद छोड़ा

हीरो या विलेन?

समय-रेखा

फिदेल कास्त्रो कौन थे?

"फिदेल! फिदेल! फिदेल!" क्यूबा की राजधानी हवाना शहर में सैकड़ों-हजारों लोग इकट्ठा होकर फिदेल कास्त्रो के लिए यह नारा चिल्ला रहे थे. यह 8 जनवरी, 1959 की शाम की बात थी. एक हफ्ते पहले, फिदेल और उनकी सेना ने क्यूबा में, राष्ट्रपति बतिस्ता की सरकार को उखाड़ फेंका था. हवाना में भीड़ अपने नए नेता की प्रतीक्षा कर रही थी. देश के लिए नई योजनाओं के बारे में लोग अपने नेता के विचार सुनना चाहते थे.

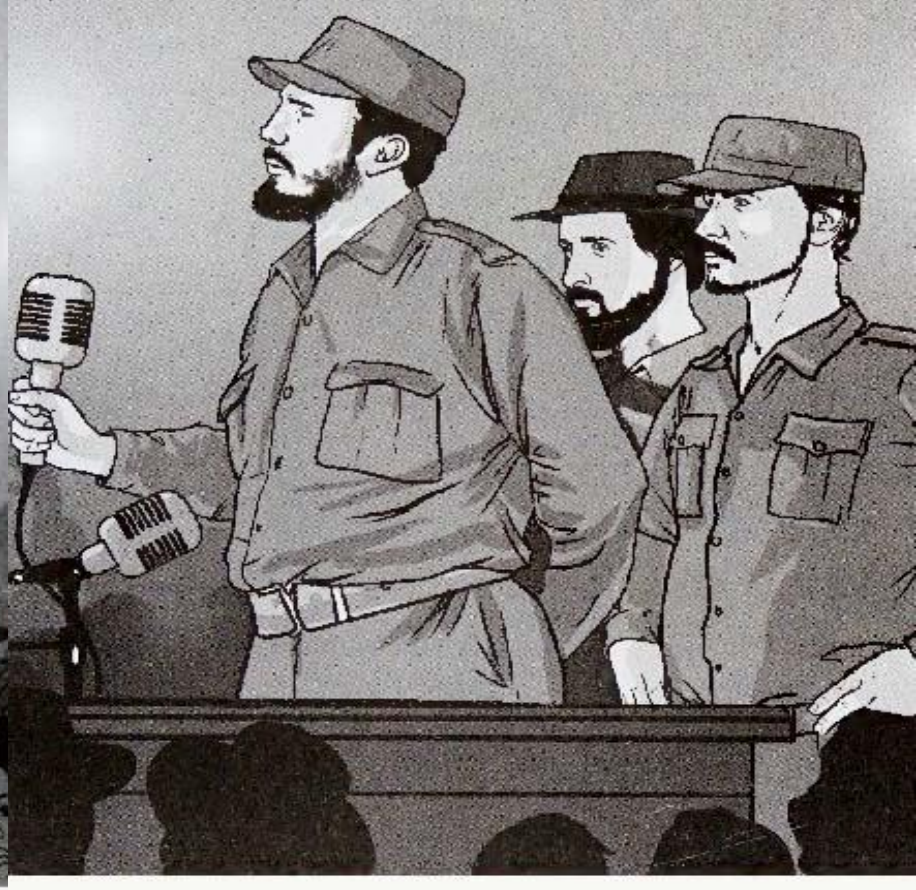

क्यूबा के लोग स्वतंत्रता और उन परिवर्तनों के लिए तैयार थे जिनका वादा फिदेल ने उनसे किया था. क्यूबा के लोग अब एक नए नेता के लिए तैयार थे.

जिस मंच पर फिदेल को भाषण देना था, उस पर तेज़ प्रकाश डाला गया था. फिदेल अंतत: माइक्रोफोन की ओर बढ़े. उनकी एक बड़ी, घनी दाढ़ी थी और उन्होंने सेना की टोपी और सेना की हरी वर्दी पहन रखी थी. फिदेल को देखते ही भीड़ ने और भी जोर से तालियां बजाईं.

फिदेल ने दो घंटे तक भाषण दिया. उन्होंने हवाना, क्यूबा और दुनिया भर में सुनने वाले सभी लोगों से कहा कि वो देश के नए नेता थे, और वो अपनी प्यारी मातृभूमि में बदलाव लाने के लिए कटिबद्ध थे.

जैसे ही फिदेल ने अपना भाषण समाप्त किया, कई सफेद कबूतर हवा में छोड़े गए. उनमें से एक कबूतर उड़कर फिदेल के कंधे पर जा बैठा. भीड़ चुप हो गई. सफेद कबूतर को शांति का प्रतीक माना जाता था. कई लोगों को वो एक दैवीय संकेत लगा. उन्हें लगा कि फिदेल, जो उस समय केवल बत्तीस वर्ष के थे, को विशेष रूप से क्यूबा का नेतृत्व करने के लिए चुना गया था.

अध्याय 1

खुशहाल अमीर बचपन

फिदेल कास्त्रो का जन्म 13 अगस्त 1926 को हुआ था. उनके पिता का नाम एंजेल था. वो गन्ने के एक बागान (प्लांटेशन) के मालिक थे. (प्लांटेशन एक बहुत बड़ा खेत होता है जहाँ आमतौर पर केवल एक ही फसल उगाई जाती है.) 1905 में वो स्पेन से, क्यूबा में आकर बस गए थे. फिदेल की मां, उना, बागान में एक हाउसकीपर थीं. फिदेल, एंजेल और उना की तीसरी संतान थे. फिदेल के जन्म के बाद, दंपति के चार और बच्चे हुए. एंजेल और उना ने फिदेल के किशोर होने तक आपस में शादी नहीं की थी.

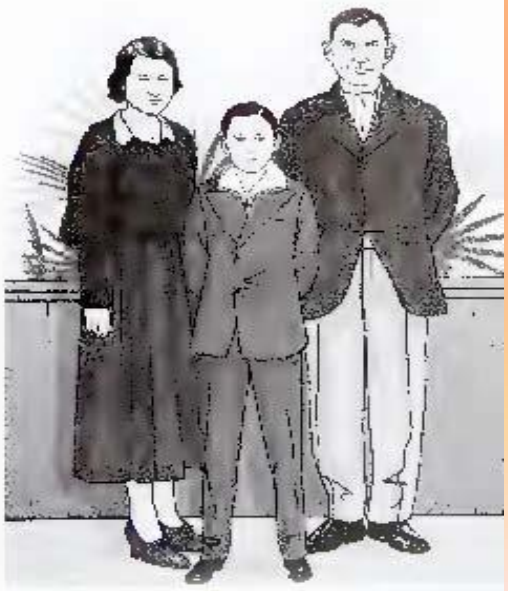

फिदेल जिस गन्ने के बागान में पले-बढ़े थे, उसे लास मनकास कहा जाता था. वो बीरन शहर के पास था, बीरन क्यूबा के पूर्वी छोर पर था. उस समय, यह क्षेत्र क्यूबा के सबसे गरीब क्षेत्रों में से एक था. तब अधिकांश लोग बिना पानी या बिजली के साधारण झोंपड़ियों में रहते थे. लोग छोटे खेतों और बागानों में काम करते थे जहाँ उन्हें बहुत कम पैसे मिलते थे.

फिदेल के पिता ने इसी तरह शुरुआत की थी. लेकिन वो अपने लिए एक बेहतर जीवन बनाने के लिए दृढ़ थे. एंजेल ने खुद को पढ़ना-लिखना सिखाया. उन्होंने कड़ी मेहनत की और पैसे बचाए ताकि वो अपनी खुद अपनी ज़मीन खरीद सकें. एंजल को गर्व था कि वो अपने परिवार को वो चीजें दे पा रहे थे जो बचपन में उन्हें खुद नहीं मिली थीं.

उनका प्लांटेशन (बागान) पच्चीस हजार एकड़ से भी बड़ा था. उसमें तीन सौ परिवार रहते थे और खेतों में काम करते थे. हालांकि फिदेल मालिक का बेटा था, लेकिन वो बागान में काम करने वाले मजदूरों के बच्चों के साथ खेलता था. और अक्सर मज़दूर, फिदेल और उसके परिवार के साथ भोजन करते थे.

क्यूबा का इतिहास

आज क्यूबा के द्वीप की आबादी लगभग ग्यारह मिलियन है. तेनो, सिबोनी और गुआनाहाटाबे नामक मूल जनजातियाँ हजारों वर्षों से क्यूबा में रहती थीं. वे लोग छोटे-छोटे गाँवों में रहते थे और शिकार करते थे, मछली पकड़ते थे और शकरकंद, मक्का, कपास और तम्बाकू जैसी फ़सलें उगाते थे. लेकिन वो सब 1492 में बदल गया, जब क्रिस्टोफर कोलंबस क्यूबा में उतरा. उसने तुरंत क्यूबा द्वीप पर स्पेन का दावा किया. स्पेन ने क्यूबा पर सैकड़ों वर्षों तक शासन किया. फिर 1895 में क्यूबाई लोगों ने स्पेन के खिलाफ युद्ध लड़ा और 1898 में अपनी स्वतंत्रता हासिल की. लेकिन इसके बाद क्यूबा पर शासन करने वाले लोग भ्रष्ट निकले. उन्होंने रिश्वतखोर निकले और उन्होंने चुनावों में धोखा दिया. इनमें से अंतिम शासक फुलगेन्सियो बतिस्ता था जिसे 1959 में फिदेल कास्त्रो ने उखाड़ फेंका.

फिदेल ने देखा कि उसका जीवन, मजदूरों के जीवन से बहुत अलग था. कास्त्रो के बच्चों को पेटभर खाने की कभी चिंता नहीं करनी पड़ती थी. वे अच्छे कपड़े पहनकर निजी स्कूलों में जाते थे. वे घोड़ों पर सवारी करते थे, नदी में तैरते थे, शिकार करते थे, मछली पकड़ते थे और पास के पहाड़ों पर चढ़ते थे.

फिदेल ने अपने बड़े भाई रेमन और अपने छोटे भाई राउल के साथ काफी समय बिताया. सभी भाई एक-दूसरे के बहुत करीब थे, खासकर फिदेल और राउल. राउल, फिदेल की बात मानता था और फिदेल हमेशा अपने छोटे भाई की देखभाल करता था.

बहुत छोटी उम्र से ही, फिदेल की जिद्दी प्रवृत्ति थी और तेज मिजाज था. यद्यपि वो एक मेधावी लड़का था, फिर भी स्कूल में उसे अपनी सीट पर बैठने में कठिनाई होती थी. फिदेल अपने शिक्षकों से बहस करता था और अन्य छात्रों से लड़ता था. वो हमेशा अपनी बात मनवाने की कोशिश करता था.

जब फिदेल लगभग सात वर्ष का था, तो उसके माता-पिता ने उसे एक निजी कैथोलिक बोर्डिंग स्कूल, ला-सल्ले में पढ़ने भेजा. रेमन और राउल को भी वहाँ भेजा गया. उनके माता-पिता को उम्मीद थी कि बोर्डिंग स्कूल उनके बेटों, विशेष रूप से फिदेल को बेहतर व्यवहार करने और एक अच्छा छात्र बनने में मदद करेगा. लेकिन वैसा नहीं हुआ. फिदेल और उनके भाइयों ने मेहनत नहीं की और उन्हें अच्छे ग्रेड नहीं मिले.

चौथी कक्षा के अंत में एंजेल अपने बेटे फिदेल को घर ले आए. उन्होंने फिदेल को वापस स्कूल भेजने से मना कर दिया. हालांकि फिदेल को स्कूल पसंद नहीं था, लेकिन वो घर में बंद रहना नहीं चाहता था. सच में, फिदेल ने अपने पुश्तैनी घर को जलाने की धमकी दे डाली! इसलिए, फिदेल के पिता ने हार मान ली. फिर उन्होंने फिदेल को और भी सख्त स्कूल में भेजने का फैसला किया.

1940 में, फिदेल डोलोरेस अकादमी में पढ़ने गया. राउल भी अपने बड़े भाई के साथ स्कूल में कुछ साल बाद दाखिल हुआ.

डोलोरेस अकादमी में फिदेल, राउल और रेमन

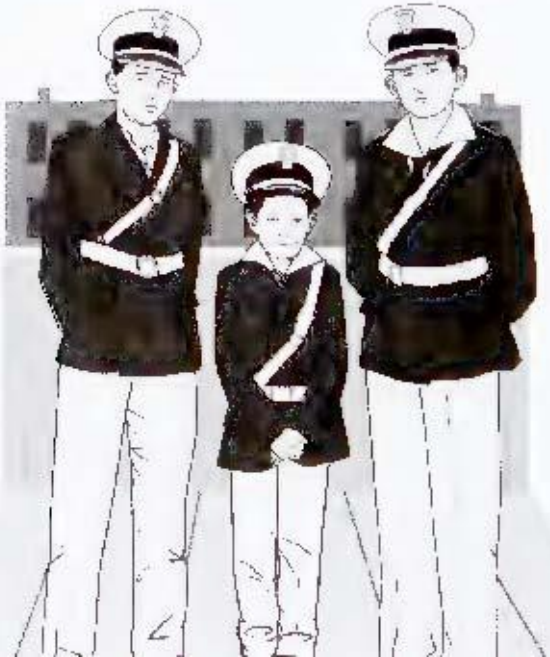

स्कूल के कई नियमों का फिदेल पर अच्छा प्रभाव पड़ा. उसने मेहनत से अध्ययन किया और उसके ग्रेड में सुधार हुआ. फिदेल ने यह भी खोजा कि वो खेलों में अच्छा था. उसने बॉक्सिंग, फुटबॉल और बेसबॉल की टीमों में अपने लिए जगह बनाई.

जब वो सोलह वर्ष का हुआ तब फिदेल ने अपने माता-पिता को, उसे जेसुइट प्रिपरेटरी स्कूल, हेलेन, हवाना में जाने देने के लिए मना लिया. वो देश का सबसे विशिष्ट हाई स्कूल था. कुछ समय बाद राउल भी अपने बड़े भाई के साथ वहाँ गया.

वैसे फिदेल एक अमीर परिवार से आता था. लेकिन अन्य लड़कों ने फिदेल को एक बाहरी व्यक्ति के रूप में देखा. वहां पर अधिकांश छात्र हवाना से आए थे. वे अमीर शहरी लड़के थे और वे फिदेल का देहात से आने के कारण मजाक उड़ाते थे. पीठ पीछे लड़के फिदेल को एक देहाती बुलाते थे.

राष्ट्रपति को एक पत्र

6 नवंबर, 1940 को फिदेल ने अमेरिकी राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट को एक पत्र लिखा. पत्र में उसने राष्ट्रपति को लिखा कि उसने उन्हें रेडियो पर सुना था. फिदेल ने लिखा कि वो खुश था कि रूजवेल्ट ने अपने कार्यकाल में तीसरा चुनाव जीता था. फिदेल ने राष्ट्रपति से उसे दस डॉलर का एक नोट भेजने के लिए कहा क्योंकि उसने पहले कभी ऐसा नोट देखा नहीं था.

फिदेल ने यह भी कहा कि वो राष्ट्रपति को क्यूबा की सबसे बड़ी लोहे की खदान दिखाएगा. फिदेल को लगा कि अमेरिका को जहाजों के निर्माण के लिए लोहे की ज़रुरत होगी. फिदेल को अपने पत्र का व्हाइट-हाउस से जवाब मिला. लेकिन उसमें दस डॉलर का नोट शामिल नहीं था. अपने शेष जीवन में फिदेल ने रूजवेल्ट के प्रति सम्मानजनक बातें कहीं, क्योंकि रूजवेल्ट ने महामंदी के दौरान अमेरिका में गरीबों की मदद की थी. आज फिदेल का पत्र वाशिंगटन डीसी में राष्ट्रीय अभिलेखागार (आर्काइव्ज) में रखा गया है.

फिदेल ने फैसला किया कि वो लड़ने के बजाय अपनी ऊर्जा को पढ़ाई में लगाएगा. जल्द ही उसकी कड़ी मेहनत ने उसके शिक्षकों और अन्य छात्रों को प्रभावित किया. फिदेल ने अपनी कक्षा के शीर्ष के दस छात्रों में अपना स्थान बनाया. उसकी वार्षिक रिपोर्ट में लिखा था 'फिदेल ने हमेशा सभी विषयों में सम्माननीय प्रदर्शन किया ... वो ... एक सच्चा एथलीट है, उसने हमेशा गर्व और वीरता के साथ स्कूल के बैनर का बचाव किया है. उसने सभी की प्रशंसा और स्नेह जीता. . .

फिदेल कास्त्रो रूज

हमें इस बात में कोई संदेह नहीं है कि फिदेल के पास वो सब कुछ है जो किसी को कुछ बड़ा हासिल करने के लिए चाहिए होता है और वो ज़रूर अपने जीवन में कुछ करके दिखाएगा.'

अध्याय दो

छात्र दिवस

हाई स्कूल के दौरान, फिदेल ने अमरीका में एक टीम के लिए बेसबॉल खेलने का सपना देखा था. लेकिन उसने स्नातक पूरा करने के बाद कानून का अध्ययन करने का फैसला किया. उसने महसूस किया कि उसकी दृढ़ इच्छाशक्ति ही उसे एक अच्छा वकील बनाएगी. उसने 1945 में हवाना विश्वविद्यालय में दाखिला लिया.

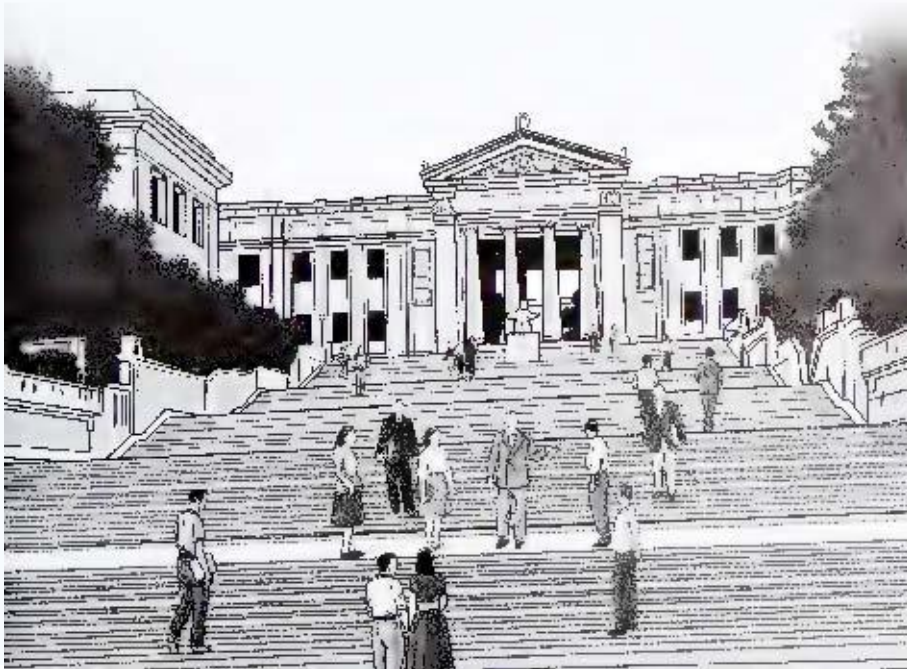

विश्वविद्यालय पढ़ने और सीखने की जगह थी. लेकिन वो एक खतरनाक जगह भी थी. क्यूबा के राजनीतिक दलों के विश्वविद्यालय में छात्र समूह थे. सरकार को कैसे बदलना है, इसके बारे में राजनीतिक दलों के अलग-अलग विचार थे, और उसी तरह छात्र समूहों के भी. समूहों के बीच चर्चा अक्सर हिंसक बहस में बदल जाती थी जिसे बंदूक या चाकू से सुलझाया जाता था.

फिदेल ने इन समूहों में रुचि ली. लेकिन उसने उनमें से किसी में शामिल न होने का फैसला किया. क्योंकि फिदेल किसी एक समूह से संबंधित नहीं थे, इसलिए वे सभी समूहों की रैलियों में बोलने के लिए मुक्त थे.

फिदेल भीड़ के सामने बोलने से घबराते नहीं थे. उन्होंने पाया कि उन्हें सार्वजनिक भाषण देना पसंद था और वो उसमें प्रभावी थे. फिदेल ने सोचा कि एक राजनैतिक करियर उनके लिए सही होगा. उसके बाद उन्होंने कैंपस में सूट और टाई पहननी शुरू कर दी ताकि दूसरे छात्रों का ध्यान उनकी ओर आकर्षित हो.

राजनीति में फिदेल की रुचि तेज़ी से बढ़ती गई, और क्यूबा में क्या-क्या गलत था फिर वो उसे ध्यान से देखते रहे. उन्होंने महसूस किया कि गरीब लोगों की जरूरतों को नजरअंदाज किया जा रहा था. नेताओं को केवल अपनी और अपनी सत्ता की फ़िक्र थी. फिदेल भ्रष्ट सरकार से लोगों को छुटकारा दिलाना चाहते थे.

उसके बाद फिदेल ने सीधे क्यूबा के राष्ट्रपति रेमन ग्राउ सैन मार्टिन के खिलाफ बोलना शुरू कर दिया. फिर प्रेस और सरकार का ध्यान फिदेल की ओर आकर्षित हुआ. लेकिन फिदेल डरे नहीं. उनके लिए अपने विश्वासों के लिए बोलना बहुत महत्वपूर्ण था.

रेमन ग्रेउ सैन मार्टिन

1947 में, फिदेल अंततः एक राजनीतिक पार्टी - ऑर्थोडॉक्स पार्टी नामक एक समूह में शामिल हुए. उसके नेता एडुआर्डो चिबास थे. वो सरकार में एक सदस्य थे. लेकिन वो चाहते थे कि क्यूबा में ईमानदार नेता हों. वो भी फिदेल की तरह क्यूबा के लोगों के लिए बेहतर जीवन का निर्माण करना चाहते थे.

क्यूबा में बदलाव लाने के अलावा, फिदेल की दिलचस्पी लैटिन अमेरिका के अन्य हिस्सों में क्या हो रहा था उस बात में भी थी.

1948 के वसंत में, उन्होंने और कई अन्य छात्रों ने, एक छात्र सम्मेलन में भाग लेने के लिए बोगोटा, कोलंबिया की यात्रा की. दुनिया के कुछ क्षेत्रों में अमेरिका के बढ़ते प्रभाव का विरोध करने के लिए वो सम्मेलन आयोजित किया गया था.

अमेरिका दुनिया का सबसे शक्तिशाली देश था. उसके पास अथाह धन और विशाल सेना थी. अमेरिका ने अक्सर छोटे, कम शक्तिशाली देशों से सहायता मांगी थी, जैसे अमेरिका को कम कीमत पर सामान बेचना और अमेरिकी सेना को, सैन्य ठिकाने स्थापित करने की अनुमति देना. छोटे देशों के दिल में डर था. अगर उन्होंने अमेरिका से मना किया तो फिर क्या होगा?

जब फिदेल कोलम्बिया में थे, तब कोलम्बिया के मजदूर वर्ग के एक प्रिय नेता को गोली मार दी गई. खबर सुनते ही लोगों में भगदड़ मच गई.

फिदेल और उनके मित्र दंगाइयों द्वारा आग लगाये जाने, कारों को उलटने और सरकारी इमारतों को तोड़ते हुए देखकर चकित रह गए. क्या फिदेल को वो गलत लगा? नहीं, फिदेल ने उन हिंसक विरोध प्रदर्शनों की प्रशंसा की.

फिदेल और अन्य लोगों ने पहली बार देखा कि जब लोग किसी कारण के लिए समर्पित होते हैं तो वे उसका समर्थन करने के लिए कुछ भी कर सकते हैं. अक्सर वे अत्यधिक कार्रवाई करते हैं. फिदेल ने बाद में कहा, "मैं क्रांतिकारी जोश से भर गया था."

जब फिदेल हवाना लौटे, तो उन्होंने एडुआर्डो चिबास के लिए प्रचार किया. चिबास, राष्ट्रपति पद के लिए लड़ रहे थे. चुनाव 1 जून, 1948 को होने थे. फिदेल ने चिबास के साथ पूरे क्यूबा की यात्रा की. रैलियों में वो अक्सर चिबास से पहले बोलते थे. जब चिबास चुनाव हार गए तो फिदेल निराश हो गए. हालांकि, उससे क्यूबा में बदलाव लाने की उनकी इच्छा नहीं बदली.

एडुआर्डो चिबास

अध्याय 3

अच्छे उद्देश्य वाला विद्रोही

यूनिवर्सिटी में पढ़ते हुए फिदेल को राजनीति से प्यार हो गया था. और फिर उन्हें मिर्ता से भी प्रेम हो गया. मिर्ता डियाज़-बलार्ट, दर्शनशास्त्र की छात्रा थीं. (दर्शनशास्त्र जीवन का अर्थ समझने की पढ़ाई होती है.) मिर्ता, फिदेल से प्यार करती थीं, लेकिन राजनीति में उनकी कोई दिलचस्पी नहीं थी.

मिर्ता, एक महत्वपूर्ण और धनी परिवार से थीं. उनके पिता, कास्त्रो बागान के पास ही, एक शहर के मेयर थे. मिर्ता के पिता एक मुखर, विद्रोही व्यक्ति के साथ अपनी बेटी के रिश्ते से खुश नहीं थे. उन्हें फिदेल, एक दंगे-फसाद वाला आदमी लगा.

हालाँकि, फिदेल के पिता इस बात से उत्साहित थे कि उनका बेटा एक महत्वपूर्ण परिवार से जुड़ा रहा था. जब 12 अक्टूबर, 1948 को फिदेल और मिर्ता की शादी हुई, तो एंजेल ने उनके लिए एक बड़ी पार्टी आयोजित की.

सितंबर 1949 को मिर्ता ने एक बेटे को जन्म दिया. मिर्ता और फिदेल ने उसका नाम फेलिक्स फिदेल रखा, लेकिन वे उसे फिडेलिटो कहते थे. (उस उपनाम का अर्थ था "छोटा फिदेल") हालांकि अब वे एक पति और एक पिता थे, फिदेल ने अपने परिवार के साथ बहुत कम समय ही बिताया, क्योंकि अब राजनीति तेजी से उनका जीवन बन रही थी. नौकरी खोजने और मिर्ता और फिडेलिटो की सहायता करने के बजाय, फिदेल अपना अधिकांश समय ऑर्थोडॉक्स पार्टी के मुख्यालय में बिताते थे.

फिदेल और मिर्ता दोनों अमीर परिवारों से आते थे, और वे अपने माता-पिता से पैसे मांग सकते थे लेकिन फिदेल अपनी संपत्ति पर निर्भर नहीं रहना चाहते थे. वो अपने परिवार के लिए एक साधारण जीवन चाहते थे. वो अन्य लोगों के लिए एक उदाहरण बनना चाहते थे.

1950 की पतझड़ में, फिदेल ने हवाना विश्वविद्यालय से कानून की डिग्री के साथ स्नातक किया. फिदेल के लिए विश्वविद्यालय में प्रवेश पाना आसान नहीं था. उन्होंने ज्यादा पढ़ाई नहीं की थी, कक्षाएं छोड़ दी थीं और कभी-कभी उन्होंने परीक्षा भी नहीं दी थी. लेकिन उस काल ने उन्हें आगे के जीवन के लिए तैयारी में मदद की.

फिदेल ने शीघ्र ही हवाना में एक कानूनी कार्यालय खोला. उन्होंने ऐसे मामले उठाए जिनसे गरीबों को मदद मिले. फिदेल चाहते थे कि अन्य लोग उन्हें मजदूर वर्ग की एक आवाज के रूप में देखें - जनता उन्हें एक हीरो के रूप में देखे.

फिदेल ने क्यूबा के प्रतिनिधि सभा की सीट के लिए चुनाव लड़ने का फैसला किया. वो ऑर्थोडॉक्स पार्टी के एक महत्वपूर्ण सदस्य बन गए. फिदेल और पार्टी दोनों को लगा कि वो सीट जीत जाएंगे.

फुलगेन्सियो बतिस्ता

उस समय ऑर्थोडॉक्स पार्टी के नेता रॉबर्टो एग्रामोंटे थे. वो फुलगेन्सियो बतिस्ता के खिलाफ राष्ट्रपति पद के लिए लड़ रहे थे.

बतिस्ता 1940 से 1944 तक देश के राष्ट्रपति रहे थे. तब से वो फ्लोरिडा में रह रहे थे. ऐसा लगता था उनके चुनाव जीतने की बहुत कम संभावना थी.

हालाँकि, क्यूबा के लोगों को तभी एक बड़ा झटका लगने वाला था.

चुनाव से तीन महीने पहले, बतिस्ता ने तख्तापलट किया. (अर्थात उन्होंने अचानक सत्ता हथिया ली.) बतिस्ता ने क्यूबा की सेना की सहायता से सरकार पर कब्ज़ा कर लिया. बतिस्ता की कार्रवाई से क्यूबा के लोग हैरान थे, लेकिन उन्होंने बतिस्ता का विरोध नहीं किया. कुछ क्यूबावासी खुश भी थे. क्योंकि जब बतिस्ता प्रेजिडेंट थे तब उन्होंने देश में कुछ सड़कें, अस्पताल और स्कूल बनवाए थे.

लेकिन बतिस्ता के सत्ता संभालने के तुरंत बाद, क्यूबाई लोगों ने अपनी आशाओं को कुचलते हुआ देखा. जिसने भी उनका विरोध किया बतिस्ता ने उसे जेल में डाल दिया. उन्होंने राजनीतिक दलों पर पाबन्दी लगा दी. उन्होंने प्रेस को नियंत्रित किया. और उन्होंने सरकारी परियोजनाओं के पैसे खुद के लिए इस्तेमाल किये.

अब फिदेल को प्रतिनिधि सभा की सीट जीतने की कोई उम्मीद नहीं रही थी. जो कुछ हुआ था फिदेल उस पर बहुत क्रोधित थे. क्यूबा में, ईमानदार नेताओं के साथ निष्पक्ष सरकार का सुंदर अवसर गायब हो गया था. अब फिदेल को यह लगने लगा था कि सत्ता हासिल करने का एकमात्र तरीका सशक्त बल द्वारा था. चुनावों के माध्यम से यानि शांतिपूर्ण तरीके से बदलाव लाने से काम नहीं बनने वाला था. फिदेल ने बतिस्ता को, सशस्त्र क्रांति से उखाड़ फेंकने की और क्यूबा को बचाने की कसम खाई.

अध्याय 4

अनुयायी से नेता तक

बतिस्ता के प्रति अपनी नफरत को लेकर फिदेल बहुत खुले थे. उन्होंने क्यूबा के राष्ट्रपति के खिलाफ एक मोर्चे का आयोजन किया. उन्होंने धन जुटाया और अपने उद्देश्य की पूर्ती के लिए हथियार भी जुटाए.

जल्द ही एक हजार लोग फिदेल के आंदोलन में शामिल हो गए. उन्होंने खुद को "फिडेलिस्टास" कहा. फिडेलिस्टास, बतिस्ता को उखाड़ फेंकना चाहते थे. और फिडेलिस्टास में सबसे वफादार कौन था? राउल. उस समय तक, राउल कॉलेज छोड़ चुका था और वो अपने बड़े भाई के अनुयायियों के बढ़ते हुए समूह में शामिल हो गया था.

फिदेल अपने मजबूत व्यक्तित्व के बल पर बहुत सारे लोगों को जीतने में सक्षम हुए. उनमें बहुत जबरदस्त करिश्मा था.

लोगों से बात करते समय फिदेल ने उन्हें विश्वास दिलाया कि कुछ भी कर पाना संभव था. फिदेल देखने में किसी फिल्म-स्टार से कम नहीं थे. वो छह फीट से अधिक लंबे थे, और उनका शरीर गठा हुआ था. वो देखने में बड़े शक्तिशाली नज़र आते थे.

फिदेल की योजना सैंटियागो जाने की थी, जो कि द्वीप के बिल्कुल पूर्वी छोर पर स्थित एक शहर था. वहां पर वो मोनकाडा सैन्य बैरकों पर हमला करने वाले थे, जबकि राउल और अन्य फिदेलिस्ता सरकारी भवनों, जैसे कि पैलेस ऑफ जस्टिस पर कब्जा करने वाले थे.

बाद में, फिदेल मोनकाडा में रेडियो स्टेशन से अपनी जीत की घोषणा करते. फिदेल को उम्मीद थी छापे की खबर पूरे क्यूबा के लोगों को बतिस्ता के खिलाफ उठने के लिए प्रेरित करेगी.

छापे में दो सौ से कम फिदेलिस्ता हिस्सा लेने वाले थे. लेकिन बैरकों में सात सौ से अधिक सरकारी सैनिक थे. फिदेल के कुछ अनुयायी उस बात से चिंतित थे.

उनका छोटा समूह इतने सारे सैनिकों से युद्ध कैसे जीत सकता था? लेकिन फिदेल ने उन्हें आश्वासन दिलाया कि वे सफल होंगे. एक बार फिर उनके शक्तिशाली व्यक्तित्व ने उनके अनुयायियों का दिल जीत लिया. इसलिए, 24 जुलाई, 1953 को फिदेल और फिदेलिस्ता के छोटे समूह ने हवाना से सैंटियागो की यात्रा की. सैंटियागो, पूर्व में लगभग छह सौ मील की दूरी पर था, और इस यात्रा में उन्हें कई दिन लगे.

26 जुलाई की सुबह, फिदेल और उनके विद्रोहियों का काफिला छब्बीस कारों में सवार होकर मोनकाडा बैरकों की ओर गया. वे बैरकों में रखे हथियारों की तलाश कर रहे थे. लेकिन अधिकांश ड्राइवर उस नए शहर से अपरिचित थे. और जिस इमारत में उन्हें लगा कि हथियार रखे होंगे, वहां उन्हें एक नाई की दुकान मिली!

बैरक की रखवाली कर रहे जवानों ने उन पर फायरिंग शुरू कर दी. फिदेल सहित कई विद्रोही पास के सिएरा मेस्ट्रा पहाड़ों में भाग गए. हालाँकि, फिदेल के आठ अनुयायी मारे गए, और कई अन्य पकड़े गए.

जो पकड़े गए उन्हें जेल में डाल दिया गया. कुछ को मौत के घाट उतार दिया गया.

और जहाँ तक राउल के समूह का सवाल था, वे आक्रमण से पहले ही पैलेस ऑफ जस्टिस के पास कहीं खो गए. वही हाल उस टुकड़ी का हुआ जो एक अस्पताल और दूसरे बैरकों पर धावा बोलने वाली थी.

असफल छापे के पांच दिन बाद, बतिस्ता के सैनिकों ने फिदेल को ढूंढ निकाला. उन्हें गिरफ्तार किया गया और हवाना में उन पर मुकदमा चलाया गया.

फिदेल का विद्रोह करने का पहला प्रयास पूरी तरह विफल रहा.

अध्याय 5

जेल!

फिडे के खिलाफ आरोप बेहद गंभीर थे. उन्होंने सरकार को गिराने की कोशिश की थी. वो एक देशद्रोही थे.

परीक्षण के दौरान, फिदेल ने अदालत में किसी वकील की सहायता का इस्तेमाल नहीं किया. उन्होंने खुद अपनी पैरवी की.

फिदेल ने सरकारी वकीलों और जज से बहस की. उन्होंने बतिस्ता के खिलाफ आवाज उठाई. उन्होंने कहा कि वो, जोस मार्टी जैसे नेताओं के नक्शेक़दमों पर चल रहे थे. स्पेन से स्वतंत्रता के लिए क्यूबा की लड़ाई में, मार्टी एक महान नेता थे.

अपने ट्रायल के अंत में, फिदेल ने कहा, "मेरी निंदा करो! मुझे उससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा! इतिहास मुझे दोषमुक्त कर देगा!"

16 अक्टूबर, 1953 को फिदेल को पंद्रह साल की जेल की सजा मिली. उन्हें क्यूबा के दक्षिणी तट से दूर एक द्वीप पर स्थित जेल में भेज दिया गया. राउल भी उसी जेल में गए.

फिदेल ने फैसला किया कि अगर उन्हें इतने लंबे समय तक जेल में रहना है, तो उन्हें अपना समय बुद्धिमानी से व्यतीत करना होगा. वो दिन में चौदह-पंद्रह घंटे पढ़ते थे. उन्होंने अन्य कैदियों के लिए जेल में एक स्कूल शुरू किया. उन्होंने इतिहास और दर्शन विषयों को पढ़ाया. फिदेल ने अपने ट्रायल के भाषण भी लिखे. वो चाहते थे कि उनके भाषण क्यूबा की क्रांति के घोषणापत्र के रूप में काम करें.

फिदेल ने घोषणापत्र को जेल से बाहर तस्करी करवाकर बाहर पहुंचाया. उन्होंने अपना भाषण नींबू के रस से लिखा, जिसके अक्षर कागज पर गर्म इस्त्री लगाने से प्रकट हो जाते थे. उनके समर्थकों ने उनके भाषणों की प्रतियां बनाईं और उन्हें पूरे क्यूबा में बांटा.

देश के लिए फिदेल की योजनाएं अब पूरे क्यूबा में पढ़ी जा रही थीं. फिदेल प्रसिद्ध हो रहे थे. उनका नाम हर नागरिक जानने लगा था.

जेल में रहते हुए, फिदेल को पता चला कि उनकी पत्नी मिर्ता, बतिस्ता सरकार के लिए काम कर रही थीं. फिदेल इस बात से हैरान हुए कि उनकी पत्नी कुछ ऐसा करेंगी जो उनकी मान्यताओं के खिलाफ था. उससे फिदेल ने विश्वासघात महसूस किया, और उन्होंने मिर्ता को तलाक देने का फैसला किया.

एक बहुत ही निजी जीवन

फिदेल के जीवन का हिस्सा बहुत ही सार्वजनिक था. वो भाषण देने के लिए हजारों लोगों के सामने खड़े हुए और उन्होंने टीवी पर कई प्रस्तुतियां दीं. लेकिन फिडेल ने अपने निजी जीवन को बेहद निजी रखा. उन्हें हमेशा डर लगा रहता था कि उनके दुश्मन उन्हें मार डालेंगे. इस वजह से, फिदेल के पास देश भर में कई घर थे, और वो एक घर में एक रात से ज्यादा नहीं रुकते थे.

फिदेल और उनकी पहली पत्नी मिर्ता का, 1955 में तलाक हो गया. उसके बाद, फिदेल जीवन भर कई महिलाओं के साथ जुड़े रहे. दलिया सोटो डेल वैले के साथ उनका रिश्ता चालीस साल से अधिक समय तक चला.

दलिया सोटो डेल वैले

यह पता नहीं कि उन्होंने आपस में शादी की या नहीं, लेकिन उनके पांच बच्चे हुए. फिदेल के कई अन्य महिलाओं के साथ भी बच्चे पैदा किए जिनसे उन्होंने शादी नहीं की.

ऐसा लग रहा था कि फिदेल आम क्यूबा के किसी नागरिक की तरह एक साधारण जीवन जी रहे थे. लेकिन वो महज एक अफवाह थी क्योंकि वो वास्तव में एक बहुत धनी व्यक्ति थे और जब उनकी मृत्यु हुई तब वो लाखों डॉलर की संपत्ति के मालिक थे.

नवंबर 1954 में, बतिस्ता ने क्यूबा में चुनाव करवाए. किसी भी व्यक्ति को उनके खिलाफ चुनाव लड़ने की अनुमति नहीं थी, इसलिए बेशक बतिस्ता जीत गए. उन्हें क्यूबा पर अपनी शक्ति और नियंत्रण के बारे में विश्वास था. इस वजह से उन्होंने एक हैरान कर देने वाला फैसला लिया. बतिस्ता ने फिदेल, राउल और फिदेलिस्ता सहित अन्य राजनीतिक कैदियों को रिहा कर दिया. उनके इस फैसले ने क्यूबा के भविष्य को हमेशा के लिए बदल दिया.

अध्याय 6

आज़ादी!

15 मई 1955 को, दो साल से कम जेल में रहने के बाद, फिदेल रिहा हुए, और वो वापस हवाना चले गए. क्योंकि उन्होंने बतिस्ता का सामना किया था इसलिए उन्हें एक हीरो के रूप में सम्मानित किया गया.

फिदेल लगातार बतिस्ता के खिलाफ और क्यूबा सरकार के खिलाफ बोलते रहे और अब फिदेल ने अपनी क्रांति को एक नाम दिया. उन्होंने उसे 26 जुलाई का आंदोलन कहा.

यह नाम उन फिदेलिस्ता के सम्मान में था, जिनकी मोनकाडा बैरक में छापे के दौरान मृत्यु हुई थी.

फिदेल के कई भाषण अखबारों में छपे. अब बतिस्ता स्पष्ट रूप से समझ गए कि फिदेल को मुक्त करना एक भयानक गलती थी. इसलिए, बतिस्ता ने फिदेल, राउल और उनके अनुयायियों को वापस जेल में डालने की धमकी दी. बतिस्ता ने यह भी कहा कि फिदेल के भाषणों को छापने वाले अखबारों को भी बंद कर दिया जाएगा.

फिदेल को लगा कि वो अपनी और अपने अनुयायियों की जान जोखिम में डाल रहे थे. राउल पर हवाना में एक सिनेमाघर को उड़ाने का आरोप लगाया गया. आरोप एकदम झूठा था. असल में बतिस्ता के एजेंटों ने वहां बम रखा था. गिरफ्तारी से बचने के लिए राउल, मेक्सिको सिटी भाग गए. फिदेल ने फैसला किया कि वो भी मेक्सिको में अधिक सुरक्षित रहेंगे. इसलिए, वो राउल और कुछ अन्य अनुयायियों के साथ मिल गए जो पहले से ही वहाँ थे.

मेक्सिको में रहते हुए, फिदेल क्यूबा में अपने समर्थकों के संपर्क में रहे. बतिस्ता से हमेशा के लिए छुटकारा पाने के लिए एक नई योजना की जरूरत थी. फिदेल और उनके अनुयायियों को मोनकाडा बैरकों की तुलना में अब कहीं बेहतर तरीके से संगठित होना था.

इसलिए फिदेल और विद्रोहियों ने गुरिल्ला युद्ध के तरीकों का अध्ययन किया. उन्हें बतिस्ता और क्यूबा की सेना को पूरी तरह चौंका देने की जरूरत थी.

उन्होंने एक विद्रोही सेना को प्रशिक्षित करने में भी पैसे खर्च किए. अक्टूबर 1955 में, फिदेल ने इस मुहिम के लिए धन जुटाने के लिए अमेरिका का दौरा किया. बतिस्ता और उनकी नीतियों से बचने के लिए कई क्यूबाई लोग अमरीका भाग गए थे. वे फिदेल की क्रांति में मदद करके काफी खुश थे.

गुरिल्ला युद्ध

स्पेनिश में, गुरिल्ला शब्द का अर्थ होता है "छोटा युद्ध". गुरिल्ला युद्ध एक प्रकार की लड़ाई होती है जिसका उपयोग अक्सर छोटे समूहों द्वारा किया जाता है, जिनके पास बहुत सारे हथियार या पैसे नहीं होते हैं. ये छोटे समूह प्रशिक्षित सैनिकों की बड़ी टुकड़ियों को हराने के लिए “अचानक” हमलों पर भरोसा करते हैं. गुरिल्ला लड़ने की पारंपरिक शैलियों से बचते हैं जहां युद्ध के मैदान में सेनाएं एक-दूसरे का सामना करती हैं. गुरिल्ले लड़ाकू अपने दुश्मन को भ्रमित करने के लिए अपना स्थान और हमले की दिशा लगातार बदलते हैं. गुरिल्ला सेना अक्सर अपने दुश्मन पर पहाड़ों या गुफाओं जैसी छिपने की जगहों से मार करती है. फिदेल के कई गुरिल्ला सैनिक सिएरा मेस्ट्रा पहाड़ों के आसपास के गरीब गांवों और कस्बों से आए थे.

क्रांति के लिए फिदेल की योजनाएँ अब संगठित होती नज़र आ रही थीं. फिदेल और उसके अनुयायी क्यूबा वापस जाने के लिए तैयार थे.

अब कार्रवाई का समय था!

चे ग्वेरा

मेक्सिको में अपने समय के दौरान, फिदेल अर्नेस्टो "चे" ग्वेरा से मिले, जो अर्जेंटीना के एक युवा डॉक्टर थे. चे ने फिदेल के बारे में सुना था. वो बतिस्ता की सरकार को उखाड़ फेंकने के फिदेल के विचार से प्रभावित थे. चे और फिदेल जल्द ही करीबी दोस्त बन गए. वे अकसर पूरी रात राजनीति के बारे में चर्चा करते थे. चे ने फिदेल के क्रांतिकारियों के समूह में शामिल होने का फैसला किया.

चे एक विचारक और योजनाकार थे. फिदेल एक जन्मजात नेता और एक महान वक्ता थे. उन्होंने साथ मिलकर अच्छा काम किया. बतिस्ता को उखाड़ फेंकने की योजना में चे ने फिदेल की मदद की. बाद में चे, बोलीविया में गुरिल्ला युद्ध में शामिल हो गए. 1967 में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और मौत के घाट उतार दिया गया.

अध्याय 7

विवा! (चिरायु) फिदेल

फिदेल ने जो कुछ धन जुटाया था, उससे उन्होंने ग्रानमा नामक एक नाव खरीदी. नाव केवल बारह यात्रियों को ले जाने के लिए थी. लेकिन 25 नवंबर, 1956 की रात फिदेल, राउल और अस्सी क्रांतिकारी नाव में सवार हुए. उन्होंने मेक्सिको में टक्सपैन हार्बर से शुरुआत की और क्यूबा के लिए रवाना हुए.

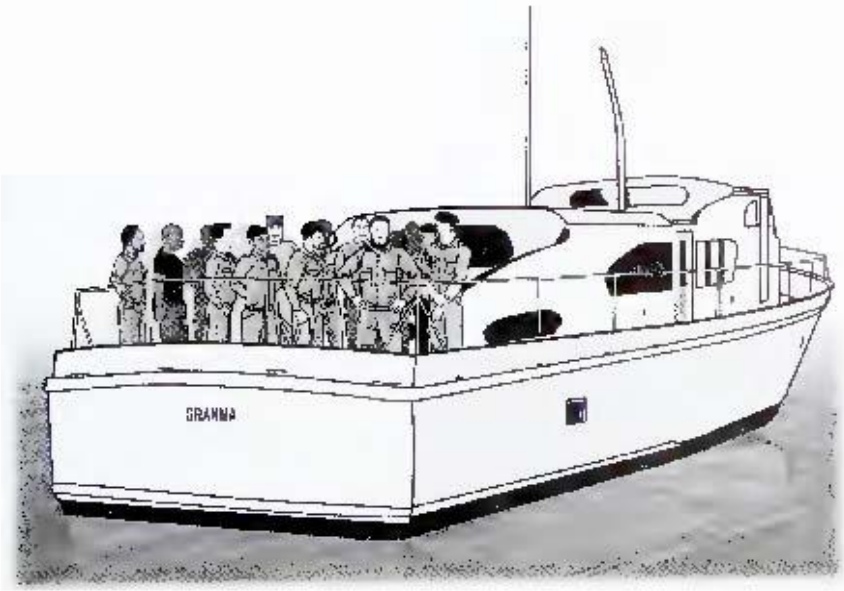

फिदेल ने क्यूबा में अपने अनुयायियों को सतर्क कर दिया था कि वह 30 नवंबर को वहां पहुंचेंगे. लेकिन यात्रा के दौरान एक तूफान आ गया. नाव उबड़-खाबड़ समुद्र में संघर्ष करती रही. फिदेल, योजना से काफी देर से क्यूबा पहुंचने वाले थे. तो फिर क्यूबा में फिदेल के अनुयायियों ने क्या किया? उन्होंने क्रांति की शुरुआत कर दी—बिना अपने नेता के!

ग्रैनमा नाव आखिरकार 2 दिसंबर को क्यूबा पहुंची. न केवल फिदेल देर से पहुंचे बल्कि उनकी नाव भी निर्धारित समुद्र तट से एक मील से भी अधिक दूर जाकर उतरी. वहां पर नाव मिट्टी में फंस गई. फिदेल और उनके क्रांतिकारियों को कूदकर किनारे जाना पड़ा. फिदेल ने बाद में याद किया, "वो लैंडिंग नहीं थी, वो तो जहाज़ की तबाही थी!"

और वहां पर फ़िदेल और उसके आदमियों का इंतज़ार कौन कर रहा था?

बतिस्ता की सेना!

बतिस्ता को विद्रोहियों की योजना के बारे में पता चल गया था और उसने उसके लिए तैयारी की थी. फिदेल और उनके आदमियों पर हवाई जहाजों और गश्ती नावों ने गोलियां चलाईं. लेकिन क्रांतिकारी पास के पहाड़ों में भाग गए. उन्हें छिपने का एक ठिकाना मिला, लेकिन 5 दिसंबर को सरकारी सेना ने उन्हें पकड़ लिया. कई क्रांतिकारी मारे गए या पकड़े गए. कुछ हमेशा के लिए भाग गए. एक बार फिर से फिदेल की योजना विफल हुई.

केवल फिदेल, राउल और बीस से कम अन्य लोग बच निकले. यह छोटा समूह पहाड़ों में और अंदर को चला गया. वहाँ वे बहुत से ऐसे लोगों से मिले जिनका जीवन बहुत कठिन था. वे लोग फिदेल के मिशन में शामिल होने के लिए उत्सुक थे. उन्होंने फिदेल के इस वादे पर विश्वास किया कि क्रांति उन्हें बेहतर जीवन प्रदान देगी.

पहाड़ों में छिपे रहने के दौरान भी फिदेल ने यह सुनिश्चित किया कि दुनिया उनके काम के बारे में जाने. उन्होंने पत्रकारों को मिलने के लिए आमंत्रित किया.

क्यूबा के विद्रोही से उनके छिपने के ठिकाने पर मुलाकात!

Cuban Rebel Is Visited in Hideout

फरवरी 1957 में न्यूयॉर्क टाइम्स के हर्बर्ट मैथ्यूज ने फिदेल का साक्षात्कार लिया. फिदेल ने असलियत से कहीं अधिक अनुयायी होने का नाटक किया. फिदेल ने अपने कुछ सैनिकों से साक्षात्कार को बाधित करने और उन्हें महत्वपूर्ण संदेश देने को कहा. अपने लेख में, हर्बर्ट मैथ्यूज ने कहा, "राष्ट्रपति फुलगेन्सियो बतिस्ता ... अपने आज तक के सबसे खतरनाक दुश्मन को नष्ट करने के लिए एक हारी हुई लड़ाई लड़ रहे हैं."

अगली लड़ाई मई 1958 में हुई. बतिस्ता ने कास्त्रो को हमेशा के लिए रोकने के लिए सिएरा मेस्ट्रा पहाड़ों में अपने दस हजार लोगों को भेजा.

सबसे पहले बतिस्ता के सैनिक, फिदेल के छोटे दस्ते को पीटने में कामयाब रहे. लेकिन जल्द ही खेल पलट गया. जैसे-जैसे लड़ाई पहाड़ों में गहरी होती गई, फिदेल के सैनिकों ने जीतना शुरू कर दिया.

फिदेल के लोग उस पहाड़ी इलाके को जानते थे और गुरिल्ला युद्ध के तरीकों का इस्तेमाल करते हुए वे सरकारी सैनिकों को चकमा देने में सक्षम रहे. पहाड़ों में रहने वाले कई लोगों ने फिदेल और उनके सैनिकों को यह भी बताया कि सरकारी सैनिक कहाँ छिपे थे.

जुलाई के अंत तक फिदेल ने फैसला किया कि अब देश भर में अपनी सेना फैलाने का समय आ गया था. कुछ पश्चिम की ओर चले गए; कुछ द्वीप के मध्य की ओर बढ़े; और फिदेल, राउल की मदद से, अन्य सैनिकों को पूर्व तक ले गए.

जैसे-जैसे 1958 करीब आया, यह स्पष्ट हो गया कि सरकारी सेना फिदेल और उनके विद्रोहियों को नहीं रोक सकती थी. बतिस्ता को डर था कि अगर फिदेल की सेना ने उन्हें पकड़ लिया तो फिर उनका क्या हश्र होगा.

इसलिए नए साल की पूर्व संध्या पर बतिस्ता ने एक आखिरी पार्टी रखी. उन्होंने वो पल अपने मेहमानों को एक बड़ी खबर बताने के लिए चुना. बतिस्ता, आधी रात को इस्तीफा देने वाले थे! उन्होंने कहा कि जो कोई भी उनके साथ भागना चाहे, वो 2:00 बजे तक हवाई अड्डे पर पहुंच जाए. अगली सुबह, 1 जनवरी, 1959 को बतिस्ता और उनका परिवार एक हवाई जहाज़ पर चढ़ा. वे डोमिनिकन गणराज्य गए, बतिस्ता बाद में पुर्तगाल और फिर स्पेन चले गए. 1973 में उनका स्पेन में निधन हो गया.

अब पूरा खेल खत्म हो गया. फिदेल और उनके क्रन्तिकारी जीत गए थे!

सैंटियागो शहर में फिदेल का एक हीरो की तरह स्वागत हुआ. राउल के साथ, फिदेल ने हवाना के पश्चिम में एक खुली जीप में धीरे-धीरे अपना रास्ता तय दिया. वो रास्ते में कई स्थानों पर भाषण देने के लिए रुके, और हर जगह भीड़ ने उनका ज़ोरदार स्वागत किया.

फिदेल आखिरकार 9 जनवरी को हवाना पहुंचे. सड़कों पर अपार लोग अपने नए नेता को देखने के लिए इंतजार कर रहे थे. जैसे-जैसे वो आगे बढ़े, सब ओर से "चिरायु फिदेल!" (फिदेल अमर रहें!) और "विवा ला क्रांति!" (क्रांति जिंदाबाद!) के नारे सुनाई दिए.

क्यूबा के लिए यह एक नए युग की शुरुआत थी. कम-से-कम लोगों को तो यही उम्मीद थी.

अध्याय 8

योजनाओं से क्रियान्वन तक

क्या उसके बाद फिदेल क्यूबा के नए राष्ट्रपति बने?

नहीं, वो राष्ट्रपति नहीं बनना चाहते थे. लेकिन सत्ता की कमान अभी भी उनके ही हाथ में थी. फिदेल, क्यूबा के सशस्त्र कमान के प्रमुख कमांडर बने. उन्होंने मैनुएल उरुटिया को राष्ट्रपति के रूप में नामित किया, लेकिन वो फिदेल जितने शक्तिशाली नहीं थे. उरुटिया एक न्यायाधीश थे जो अक्सर बतिस्ता से असहमत रहते थे.

उरुटिया एक नई सरकार और एक कैबिनेट गढ़ने के काम में लगे. इस बीच, फिदेल ने बतिस्ता के समर्थकों को सजा देने पर अपना ध्यान केंद्रित किया. उन्होंने उसकी ज़िम्मेदारी राउल और चे ग्वेरा को सौंपी.

राउल

फिदेल उन्हें चुनौती देने वाले हर शत्रु से छुटकारा पाना चाहते थे. बतिस्ता ने भी वही किया था. फिदेल ने रेडियो पर भाषण दिए, वे टीवी पर लगातार दिखाई दिए और उन्होंने अखबारों को साक्षात्कार दिए.

फिदेल, क्यूबा और बाकी दुनिया को याद दिलाना चाहते थे कि उन्होंने क्रांति जीती थी.

फिदेल, क्यूबा के नए नेता थे.

लेकिन फिदेल को क्यूबा के पड़ोसी देश अमेरिका से सावधान रहना पड़ा. अमेरिकी सरकार अपने देश से केवल नब्बे मील दूर स्थित एक देश में क्रांतिकारी नियंत्रण को लेकर चिंतित थी.

अमेरिका को इस बात की चिंता थी कि फिदेल, क्यूबा को साम्यवादी देश में बदलना चाहते थे.

1960 में विश्व का मानचित्र

साम्यवाद

1922 में, रूस और चौदह अन्य देशों ने एक साथ मिलकर एक साम्यवादी राज्य बनाया, जिसे सोवियत सोशलिस्ट रिपब्लिक (USSR) संघ कहा जाता था.

साम्यवाद एक राजनीतिक व्यवस्था होती है जहां सरकार सभी कारखानों, खेतों और व्यवसायों का मालिक होती है और उन्हें नियंत्रित करती है. वहां पर लोगों को निजी संपत्ति रखने की अनुमति नहीं होती है. सरकार से सभी नागरिकों को वो मिलता है जिसकी उन्हें जरूरत होती है. साम्यवाद का लक्ष्य प्रत्येक नागरिक के लिए जीवन को निष्पक्ष और समान बनाना होता है. लेकिन वहां केवल एक ही राजनीतिक दल होता है - कम्युनिस्ट पार्टी - इसलिए वहां स्वतंत्र चुनाव नहीं होते हैं. वहां बोलने की आजादी भी नहीं होती है.

हालांकि रूस ने द्वितीय विश्व युद्ध (1939-45) में अमेरिका की तरफ से लड़ाई लड़ी थी, लेकिन बाद में दोनों देश आपस में दुश्मन बन गए थे.

कम्युनिस्ट रूस में लोग भोजन के लिए कतार में खड़े हुए

अमेरिका, दूसरे देशों में साम्यवाद फैलने और रूस के, अमेरिका से अधिक शक्तिशाली बनने से बहुत भयभीत था. अमेरिकी सरकार ऐसा न होने के लिए दृढ़ थी.

फिदेल ने अप्रैल 1959 में अमेरिका का दौरा किया. वो अमेरिकी सरकार और अमेरिकी नागरिकों को यह विश्वास दिलाना चाहते थे कि क्यूबा उनका मित्र था. न्यूयॉर्क शहर में, उन्होंने भाषण दिया, और यह कहा कि वे कम्युनिस्ट नहीं थे. उन्होंने वादा किया कि उनकी नई सरकार क्यूबा में अमेरिकी कंपनियों के कामकाज में हस्तक्षेप नहीं करेगी.

फिदेल ने अमरीकी उपराष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन से मुलाकात की

उन्होंने यह भी वादा किया कि क्यूबा, रूस और साम्यवाद के खिलाफ, अमेरिका का समर्थन करेगा. फिदेल के इन शब्दों को सुनकर अमेरिकी सरकार को ज़रूर कुछ राहत मिली.

पर क्या फिदेल ने अपने वादों को निभाया?

नहीं!

क्यूबा लौटने पर, फिदेल ने ठीक उसका उल्टा किया. उन्होंने क्यूबा को एक साम्यवादी राष्ट्र में बदलना शुरू किया. वहां पर धनी जमींदारों की संपत्ति छीनी गई और वो श्रमिक वर्ग को दे दी गई. क्यूबा की सरकार ने टेलीफोन कंपनी जैसे कुछ बड़े व्यवसायों को अपने नियंत्रण में ले लिया. और भले ही फिदेल ने अमेरिकी सरकार को आश्वस्त किया था कि क्यूबा अमेरिकी कंपनियों को अकेला छोड़ देगा, पर क्यूबा की सरकार ने उन पर भी कब्ज़ा कर लिया.

समाचार पत्र महत्वपूर्ण होते हैं क्योंकि वे पाठकों को जानकारी देते हैं. लेकिन फिदेल अपने और अपनी सरकार के खिलाफ बोलने वाले लोगों को लेकर चिंतित थे. इसलिए, उन्होंने बदलाव किए. समाचार पत्र उनकी नीतियों की आलोचना ज़रूर कर सकते थे, लेकिन साथ में उन्हें नई सरकार की आधिकारिक नीतियों को भी छापना ज़रूरी था.

उससे समाचार पत्र बहुत गुस्सा हुए. अखबार में क्या छपेगा फिदेल उसे नियंत्रित कर रहे थे. लेकिन अगर अखबार फिदेल की इच्छा का पालन नहीं करते तो उन्हें बंद कर दिया जाता था.

फिदेल द्वारा किए जा रहे परिवर्तनों से श्रमिक वर्ग प्रसन्न था. नई सरकार ने कई लोगों को जमीन दी जहाँ पर वे अब खेती कर सकते थे.

उन्होंने पब्लिक स्कूल प्रणाली का भी विस्तार किया और अधिक लोगों को स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध कराईं. क्यूबा के सबसे गरीब नागरिकों के जीवन में लगातार सुधार हो रहा था.

हालांकि, मध्य और उच्च वर्ग के बहुत से लोग नई सरकार से बिल्कुल भी खुश नहीं थे. फिदेल ने उनका जो कुछ भी था, वो सब छीन लिया था. और उन्होंने यह भी ऐलान कर दिया कि अगले चार साल तक स्वतंत्र चुनाव नहीं होंगे. अब ऐसा लगने लगा था कि क्यूबा का नया नेता, देश को लोकतंत्र से दूर साम्यवाद की ओर मोड़ रहा था. इनमें से कई क्यूबन्स ने अपना देश छोड़ने का फैसला किया और वे मियामी, फ्लोरिडा (अमरीका) चले गए. वहां पर उन लोगों ने अपना "छोटा हवाना" बनाया, जो घर से दूर उनके लिए एक घर था.

लिटिल हवाना, अमरीका में आपका स्वागत है

अमेरिका, क्यूबा के इन शरणार्थियों को स्वीकार करने में प्रसन्न था क्योंकि फिदेल के बहुत तमाम परिवर्तन अगर कुछ नागरिकों की मदद कर रहे थे तो वे कुछ को नुकसान भी पहुँचा रहे थे. अमेरिका, जिसने अब तक क्यूबा का समर्थन किया था, उसका रुख अब क्यूबा के प्रति शत्रुतापूर्ण हो गया था.

फिदेल, अमेरिका का समर्थन खोने से नाराज थे. लेकिन उन्हें जल्द ही इस बात का एहसास हुआ कि वो क्यूबा में अपनी योजनाओं में मदद के लिए एक दूसरे देश पर भरोसा कर सकते थे: वो देश जो अमरीका का सबसे बड़ा दुश्मन था - रूस.

अध्याय 9

मित्र और शत्रु

फिदेल ने सत्ता में आने के कुछ ही समय बाद, क्यूबा ने चीनी की कुछ फसल, सोवियत संघ को बेचने की पेशकश की. जल्द ही क्यूबा, रूस को हर साल, दस लाख टन से अधिक चीनी बेचने लगा. बदले में, क्यूबा को ईंधन तेल, कागज, स्टील, एल्यूमीनियम और गेहूं जैसे सामान प्राप्त हुए. इन सभी चीज़ों की क्यूबा को जरूरत थी लेकिन वो उनका खुद उत्पादन नहीं करता था.

फिदेल के साथ रूस के अनास्तास मिकोयान

निकिता ख्रुश्चेव

सितंबर 1960 में, फिदेल को न्यूयॉर्क शहर में संयुक्त राष्ट्र संघ (यूनाइटेड नेशंस) की एक बैठक में क्यूबा का प्रतिनिधित्व करने के लिए आमंत्रित किया गया. फिदेल द्वारा निमंत्रण स्वीकार किए जाने के कारणों में से एक यह था कि रूस के नेता निकिता ख्रुश्चेव भी वहां आने वाले थे. उससे दोनों लोगों को आमने-सामने बात करने का मौका मिलता.

फिदेल और ख्रुश्चेव एक-दूसरे को गले लगाकर और हंसते हुए फोटो खिंचवा रहे थे. उससे अमेरिकी सरकार के अधिकारी नाराज थे. फिदेल यह संकेत दे रहे थे कि क्यूबा को अब अमेरिका की जरूरत नहीं है. क्यूबा अब दुनिया की दूसरी महाशक्ति पर भरोसा कर सकता था.

अमेरिका, फिदेल के साथ उनकी रूस से निकटता का बदला लेना चाहता था. इसलिए, कुछ दवाएं और भोजन भेजने के अलावा, अमेरिका ने क्यूबा के साथ अपना बाकी सभी व्यापार बंद कर दिया. फिदेल ने क्यूबा के नागरिकों से कहा कि यह इस बात का संकेत था कि अमेरिका क्यूबा पर हमला करने जा रहा था. फिदेल ने कहा कि क्यूबा की सेना को तैयार रहने की जरूरत थी.

The Miami Herald

Cuban Blockade Ordered;
JFK Warns of War Peril

JFK's 7-Point Program on Cuba

Food, Medicine Only Commodities Allowed to Pass

क्यूबा की नाकाबंदी का आदेश देकर जॉन एफ़. कैनेडी ने युद्ध संकट की चेतावनी दी

हालाँकि अमेरिका, क्यूबा पर आक्रमण करने की तैयारी नहीं कर रहा था, लेकिन उसने फिदेल से छुटकारा पाने की साजिश रची थी. अमेरिकी सैन्य टुकड़ियों का उपयोग करने के बजाए, अमेरिका ने क्यूबा के शरणार्थियों (क्यूबा से भागे हुए लोगों) से छापे का नेतृत्व करवाया. इस तरह अमेरिकी सरकार उस षड्यंत्र में खुद शामिल न होने का दावा कर सकती थी. फिर रूस ने अपने नए दोस्त को उखाड़ फेंकने की कोशिश के लिए अमरीका को दोषी नहीं ठहरा सकता था.

क्यूबा के शरणार्थियों को पैसे और बंदूकें दी गईं और उन्हें अमेरिकी सैनिक शिविरों में प्रशिक्षित किया गया. यह सब बेहद गोपनीय था. यह इतना गुप्त था कि नए अमेरिकी राष्ट्रपति, जॉन एफ. कैनेडी को, उसके बारे में जनवरी 1961 में, पदभार ग्रहण करने के बाद ही पता चला. राष्ट्रपति कैनेडी ने अपने चुनाव अभियान के दौरान क्यूबा के खिलाफ बोला था. हालाँकि उन्हें उस योजना के बारे में संदेह था, फिर भी उन्हें लगा कि उन्हें उस योजना के साथ आगे बढ़ना चाहिए, और क्यूबा का सामना करना चाहिए.

17 अप्रैल को, 1,511 क्यूबा के निर्वासित जिन्हें अमेरिका ने प्रशिक्षित किया था, क्यूबा में दो समुद्र तटों पर उतरे. इस क्षेत्र को बे ऑफ़ पिग्स कहा जाता था.

जॉन एफ़. कैनेडी

लेकिन फिदेल को केंद्रीय खुफिया एजेंसी (सीआईए) की योजना के बारे में पता था. फिदेल के सैनिक आक्रमण के लिए तैयार थे. उन्होंने क्यूबा के शरणार्थियों पर हवा और जमीन से हमला किया. शरणार्थियों के जीतने का कोई मौका नहीं था जब तक कि अमेरिकी सरकार उनके बचाव में नहीं आती. लेकिन राष्ट्रपति कैनेडी, क्यूबा में अमेरिकी सेना भेजना नहीं चाहते थे.

क्यूबा के अधिकांश शरणार्थियों को पकड़ लिया गया. उन्होंने इस बात का खुलासा किया कि हमलों की योजना अमेरिकी सरकार ने बनाई थी. अमेरिका पर क्यूबा की सेना की जीत ने फिदेल को क्यूबा के लोगों के बीच और भी लोकप्रिय बना दिया.

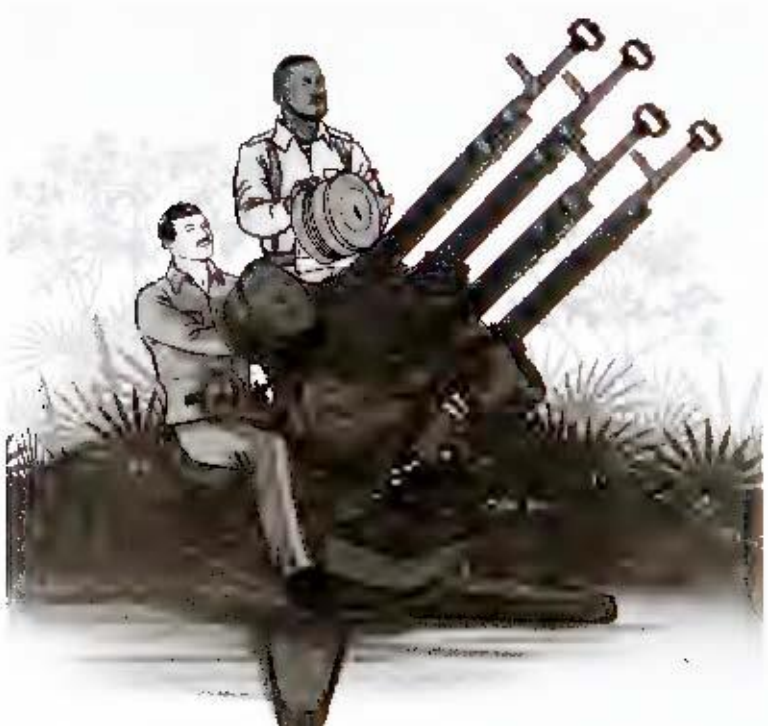

सीआईए (CIA)

1947 में स्थापित, सेंट्रल इंटेलिजेंस एजेंसी, या CIA, अमेरिकी सरकार का अभिन्न हिस्सा है. CIA के लिए काम करने वाले लोग दुनिया भर से जानकारी इकट्ठा करते हैं और उसका विश्लेषण करते हैं. यह ख़ुफ़िया जानकारी अमेरिकी नेताओं को अन्य देशों के साथ अपने संबंधों के बारे में निर्णय लेने में मदद करती है. CIA का ज्यादातर काम गोपनीय होता है. इस काम को करने वाले लोग जासूस होते हैं. CIA अन्य देशों के जासूसों को, अमेरिका के बारे में गुप्त जानकारी एकत्र करने से रोकने के लिए भी काम करती है. आज, CIA आतंकवाद और साइबर आतंकवाद (कंप्यूटर हैकिंग) को रोकने पर अपना बहुत अधिक ध्यान केंद्रित करती है.

सच्चाई यह थी कि अमेरिका ने इस साजिश का आयोजन किया था. उसके बाद से फिदेल ने अमेरिका की नियत पर और भी अधिक शक किया. उन्हें लगा कि अब अमेरिका उससे छुटकारा पाने के लिए कुछ भी करेगा. अमेरिका को गुस्सा करने के लिए, फिदेल ने फैसला किया कि क्यूबा, रूस के साथ मिलकर काम करेगा.

1962 की गर्मियों में, क्यूबा ने रूस के साथ एक समझौता किया: रूस, क्यूबा में परमाणु मिसाइल बेस बना सकता था और वहां अपनी मिसाइलें तैनात कर सकता था.

ये मिसाइलें मिनटों में अमेरिका तक पहुंचने में सक्षम थीं. वे पूरे शहरों को नष्ट करने के लिए काफी शक्तिशाली थीं.

कुछ महीने बाद, अमेरिकी जासूसी विमान, क्यूबा की क्लोज-अप तस्वीरें ले रहे थे. तस्वीरों से पता चला कि अमेरिका से रूसी मिसाइल ठिकाने सिर्फ नब्बे मील दूरी पर थे.

राष्ट्रपति केनेडी ने मांग की कि रूस अपनी मिसाइलों को हटाये. उन्होंने चेतावनी दी कि यदि रूस ने अमरीका पर हमला किया, तो अमेरिका रूस पर वापस हमला करेगा.

अपनी गंभीरता दिखाने के लिए राष्ट्रपति कैनेडी ने क्यूबा के द्वीप को घेरने के लिए अमेरिकी नौसेना के जहाजों को आदेश दिया. वे क्यूबा के पांच सौ मील के दायरे में आने वाले किसी भी मिसाइल ले जाने वाले रूसी जहाज को रोक सकते थे.

ख्रुश्चेव ने पहले ही कई जहाज भेज दिए थे. वो पीछे नहीं हटना चाहते थे, लेकिन वो परमाणु युद्ध भी शुरू नहीं करना चाहते थे. इस गतिरोध के दौरान पूरी दुनिया ने अपनी सांस रोके रखी थी.

आखिरी मिनट पर ख्रुश्चेव ने रूसी जहाजों को वापिस आने का आदेश दिए. दुनिया की दो महाशक्तियों के बीच युद्ध टल गया था. क्यूबा मिसाइल संकट खत्म हो गया.

जब फिदेल ने यह खबर सुनी तो उन्होंने दीवार पर इतनी जोर से लात मारी कि वहां का एक शीशा टूट गया. फिदेल को इतना गुस्सा क्यों आया? मिसाइल समस्या फिदेल के बिना सुलझा ली गई थी. फिदेल ने महसूस किया कि क्यूबा का उपयोग दोनों, अमेरिका और रूस द्वारा किया गया था, बिल्कुल एक शतरंज के खेल में मोहरे की तरह.

अध्याय 10

कठिन समय

हालाँकि क्यूबा के लिए फिदेल की कुछ योजनाएँ सफल रहीं, अन्य योजनाएँ असफल रहीं. अधिकांश क्यूबन लोगों के लिए मुफ्त शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध हुई. पर क्यूबा की अर्थव्यवस्था गड़बड़ा गई. देश अपने नागरिकों को खिलाने के लिए आवश्यक भोजन पैदा करने में असमर्थ रहा.

अधिकांश खेतों का उपयोग गन्ना उगाने के लिए किया जाता था. और क्यूबा ने उन सामानों का निर्माण नहीं किया जिनकी व्यवसायों को आवश्यकता होती थी, जैसे कि ट्रक और निर्माण सामग्री.

1969 में, फिदेल एक नई योजना लेकर आए और उन्हें यकीन था कि उसमें वो सफल होंगे. इसे "दस मिलियन टन फसल" कहा जाता था. अब देश में हर साल दस मिलियन टन गन्ने की कटाई करने का काम होगा. यह पिछले किसी भी वर्ष की तुलना में बहुत अधिक था. लेकिन अगले सात वर्षों में, क्यूबा में गन्ने की फसल और गिरी. "दस मिलियन टन फसल" की योजना एकदम असफल हुई.

फिदेल ने इस असफलता की पूरी जिम्मेदारी खुद पर ली. उन्होंने क्यूबा के लोगों से कहा कि शायद अब उनके लिए इस्तीफा देने का समय आ गया था. लेकिन देश में तमाम संघर्षों के बावजूद फिदेल अब भी लोगों के हीरो थे. और क्योंकि लोग उनसे प्यार करते थे, फिदेल जानते थे कि वो जो चाहें कर सकते थे.

इसलिए, 1970 के दशक के मध्य में, फिदेल ने क्यूबा की सरकार के काम करने के तरीके को बदलने का फैसला किया. उन्होंने यह काम संविधान को दोबारा लिखकर किया. (संविधान किसी देश की सरकार के कानूनों और नियमों को निर्धारित करता है.) नए संविधान में ऐसा लगा जैसे फिदेल क्यूबा के नागरिकों और सरकार को अधिक स्वतंत्रता दे रहे थे, जैसे खुले चुनाव. लेकिन वास्तव में उसका ठीक उल्टा हुआ. वे लोग जो चुनाव के लिए खड़े हो सकते थे, उन्हें फिदेल और उनकी पार्टी - क्यूबा की कम्युनिस्ट पार्टी की नीतियों से सहमत होना था. और कोई भी फिदेल के खिलाफ दौड़ने का जोखिम नहीं उठाना चाहता था, क्योंकि वो अब पूरी सरकार के प्रभारी थे. इसलिए, उन्होंने जीवन भर के लिए खुद को क्यूबा का आधिकारिक राष्ट्रपति और नेता बना लिया था.

उन्होंने सत्ता संभाली. किसी और ने नहीं.

1979 में, फिदेल ने संयुक्त राष्ट्र संघ (यूनाइटेड नेशंस) में फिर से बोलने के लिए न्यूयॉर्क शहर की यात्रा की. फिदेल को पता था कि वो दुनिया को उनकी शक्ति की याद दिलाने का एक अवसर था. फिदेल ने वहां पर दो घंटे का भाषण दिया.

उन्होंने कहा कि दुनिया के अमीर देशों को गरीब देशों में भूख, गरीबी, भ्रष्टाचार और बीमारी को खत्म करना चाहिए.

पर सच तो यह था कि क्यूबा के लोग इन्हीं समस्याओं से पीड़ित थे. फिदेल ने जिस आज़ादी और बेहतर जीवन का वादा किया था, वो कभी पूरा नहीं हुआ था.

1 अप्रैल, 1980 को फिदेल के खाली वादों से थक जाने के बाद छह लोगों ने कुछ कार्रवाई की.

उन्होंने हवाना में पेरू के दूतावास के गेट से जाकर एक बस को टकरा दिया. उन लोगों ने दूतावास से उन्हें फिदेल और उनकी कठोर नीतियों से बचाने के लिए कहा. अगले तीन दिनों में, दस हज़ार से अधिक क्यूबन जो अपनी मातृभूमि छोड़ना चाहते थे, दूतावास में आए.

हवाना में पेरू का दूतावास

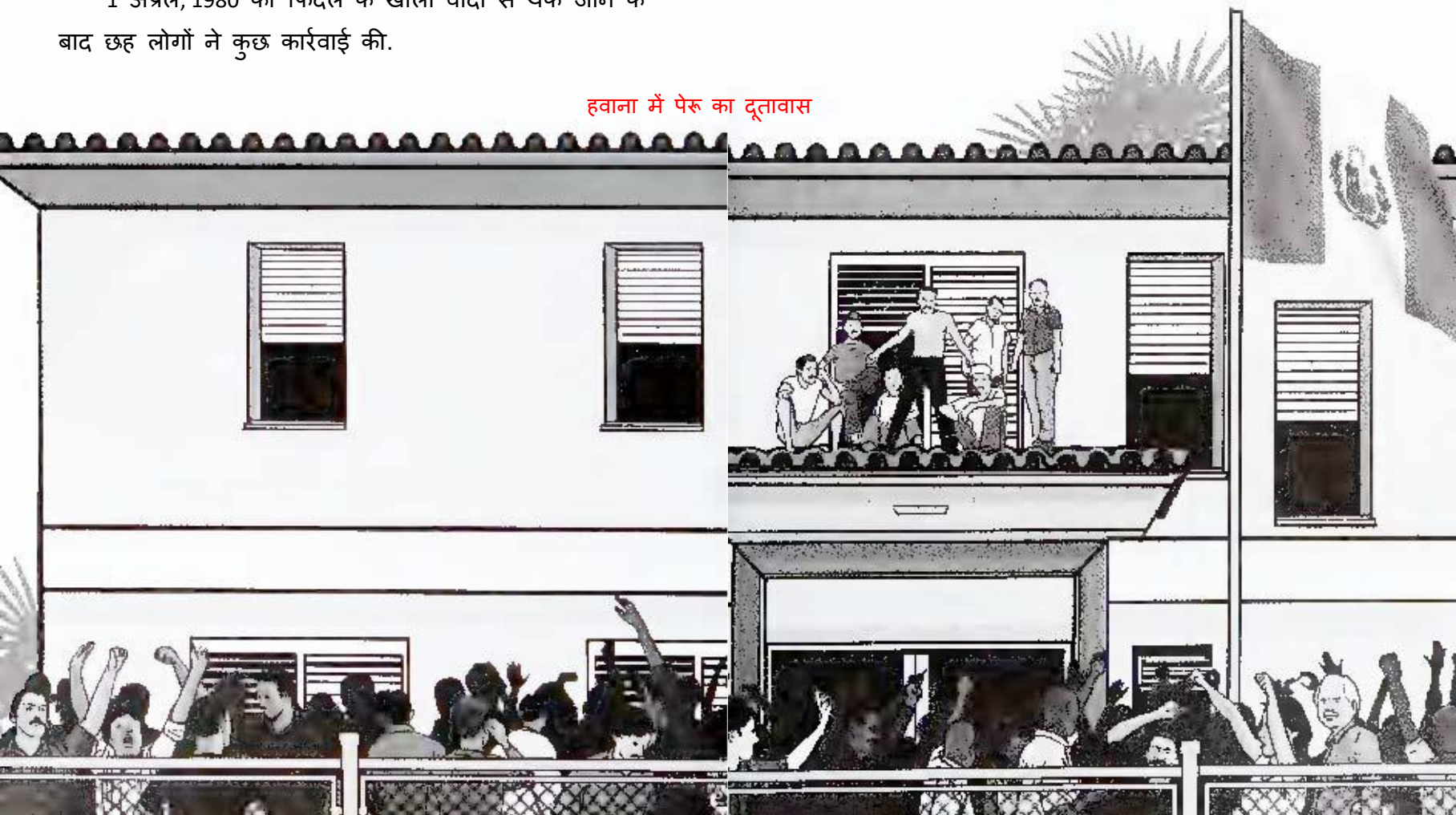

फिदेल को डर था कि और अधिक नागरिक उनके खिलाफ खड़े होने का फैसला ले सकते थे. इसलिए, 21 अप्रैल को, उन्होंने घोषणा की कि जो भी नागरिक क्यूबा छोड़ना चाहता थे, वो ऐसा करने के लिए स्वतंत्र थे. फिदेल कह रहे थे, "तुम्हें जाना है तो जाओ." उन्हें विश्वास नहीं था कि बहुत से लोग क्यूबा छोड़कर जायेंगे. हालाँकि, फिदेल और दुनिया इस बात से हैरान रह गई जब कितने अधिक लोगों ने देश छोड़ने का मन बनाया. अमेरिकी राष्ट्रपति जिमी कार्टर क्यूबा के 3500 शरणार्थियों को स्वीकार करने के लिए सहमत हुए.

और अगले कुछ महीनों में, बेहतर जीवन खोजने के लिए 120,000 से अधिक लोगों ने नावों पर भीड़ लगा दी. इससे फिदेल भड़क उठे.

नवंबर 1980 में, रोनाल्ड रीगन, अमेरिका के राष्ट्रपति चुने गए. वो घोर कम्युनिस्ट विरोधी थे. उन्हें पता चला कि क्यूबा और रूस, दक्षिण अमेरिका के तट से दूर एक द्वीप ग्रेनाडा पर एक हवाई अड्डे का निर्माण कर रहे थे.

रीगन के लिए, इसका मतलब था कि क्यूबा और रूस, साम्यवाद को नई जगहों पर फैलाने की कोशिश कर रहे थे.

रीगन उसके बिल्कुल पक्ष में नहीं थे. इसलिए, 26 अक्टूबर, 1983 को उन्होंने अमेरिकी सैनिकों को ग्रेनाडा भेजा. वहां अमेरिकी सैनिकों ने छह सौ से अधिक क्यूबाई लोगों को पकड़ा और उन्हें घर भेज दिया.

लेकिन फिदेल को सबसे बड़ा झटका तब लगा जब मिखाइल गोर्बाचेव, जो उस समय रूस, के नेता थे, ने घोषणा की कि उनके देश की सरकार को अपनी नीतियां बदलने की जरूरत थी.

उन्होंने ग्लासनोस्ट (खुलापन) और प्रेसट्रोइका (राजनीतिक व्यवस्था के पुनर्निर्माण) का आह्वान किया. फिदेल ने महसूस किया कि रूस, के इस रास्ते पर चलने से, क्यूबा अपने सबसे बड़े दोस्त के समर्थन के बिना अकेला पड़ जाएगा. क्यूबा को अब रूस, से आवश्यक सामान नहीं मिलेगा, और क्यूबा की अधिकांश चीनी खरीदने के लिए कोई नहीं देश नहीं होगा. क्यूबा एक बड़ी आपदा का सामना कर रहा था.

अध्याय 11

फिदेल ने पद छोड़ा

दिसंबर 1991 में, रूस अलग-अलग टुकड़ों में बंट गया. जो कभी एक विशाल साम्यवादी राष्ट्र था, वो अब पंद्रह अलग-अलग देशों में बंट गया. इसके परिणामस्वरूप क्यूबा को लगभग 6 अरब डॉलर की सहायता का नुकसान हुआ. क्यूबा अब तेल भेजने वाले रूस पर भरोसा नहीं कर सकता था.

इससे क्यूबा की अर्थव्यवस्था डूबने लगी. गरीब लोग और भी गरीब हो गए. सामान की राशनिंग की जाने लगी (प्रत्येक व्यक्ति को किसी चीज़ की केवल एक निश्चित मात्रा रखने की अनुमति दी जाती थी), इसलिए लोगों को हमेशा वे चीज़ें नहीं मिल पाती थीं जिनकी उन्हें ज़रूरत होती थी, जैसे कि भोजन, ईंधन और कपड़े. फिदेल को पता था कि उन्हें कुछ करना होगा. खासकर जब अमेरिकी सरकार, फिदेल की सरकार के गिरने का इंतजार कर रही थी.

फिदेल ने क्यूबा में पर्यटन को बढ़ाने का फैसला किया. उससे द्वीप में आने वाले पर्यटक देश में पैसा खर्च करेंगे. इस तरह देश को अपने कर्ज को कम करने में मदद मिलेगी. लेकिन पर्यटन में वृद्धि ने क्यूबा के लिए और भी मुश्किलें खड़ी कर दीं.

कई शिक्षित क्यूबन्स, जैसे कि वकील और इंजीनियर, ने महसूस किया कि वे टैक्सी ड्राइवरों या वेटरों के रूप में अधिक पैसा कमा सकते थे. पर्यटन उद्योग की नौकरियां उन्हें नियमित नौकरियों की तुलना में अधिक पैसा कमाने में मदद करती थीं. अब मेजों पर प्रतीक्षा करने और टैक्सियाँ चलाने के लिए बहुत से लोग थे, लेकिन अदालतों में मुक़दमों की सुनवाई करने या सड़कों और इमारतों को डिज़ाइन करने के लिए पर्याप्त लोग नहीं थे.

क्यूबा वास्तव में एक कठिन दौर से गुज़र रहा था. इसलिए, अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति जिमी कार्टर और पोप जॉन पॉल II सहित कुछ विश्व नेताओं ने क्यूबा के साथ व्यापार पर अमेरिका के प्रतिबंध के खिलाफ बोलना शुरू किया. उन्होंने महसूस किया कि इस नीति से फिदेल की तुलना में क्यूबा के लोगों को अधिक चोट पहुंच रही थी. शायद वो अमेरिका और क्यूबा के लिए अपने संबंधों को सुधारने का प्रयास करने का समय था.

पोप जॉन पॉल II

इलियान गोंजालेज

25 नवंबर, 1999 को इलियन गोंजालेज को फ्लोरिडा के तट पर एक आंतरिक ट्यूब में तैरते हुए पाया गया. इलियान, उनकी मां और ग्यारह अन्य लोग अमरीका में बेहतर जीवन खोजने के लिए क्यूबा से बचने की कोशिश कर रहे थे. यात्रा के दौरान, जिस बेड़े पर वे सवार थे, वो पलट गया. एलियन, जो पाँच साल का था, जीवित बचने वाला एकमात्र व्यक्ति था.

इलियान के माता-पिता तलाकशुदा थे. इलियान के पिता, जो क्यूबा में रहते थे, चाहते थे कि उनका बेटा वहाँ वापस भेजा जाए. लेकिन मियामी में इलियान के रिश्तेदार - उसकी मां के रिश्तेदार - चाहते थे कि वो अमेरिका में ही रहे.

इस मुद्दे पर अमेरिका और क्यूबा दोनों सरकारें लड़ाई में शामिल हुईं. दोनों देशों के नागरिकों ने विरोध प्रदर्शन किए. इलियान पर लड़ाई महीनों तक चली. अंत में, अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट ने घोषणा की कि इलियान को क्यूबा लौट जाना चाहिए और अपने पिता के साथ रहना चाहिए. 28 जून 2000 को इलियान वापस हवाना चला गया.

अमेरिका कुछ नरम हुआ. पर व्यापार प्रतिबंध अभी भी कायम रहे. लेकिन 2000 से शुरू होकर, अमेरिकी कंपनियों को क्यूबा को खाद्य पदार्थ बेचने की अनुमति मिली, ऐसा खाद्य पदार्थ जो क्यूबा खुद नहीं उगाता था. इससे क्यूबा के कई नागरिकों को अपना जीवन आसान बनाने में मदद मिली.

इस समय तक, फिदेल सत्तर साल के हो गए थे, और लोग उनके स्वास्थ्य के बारे में अटकले लगाने लगे थे. जून 2001 में फिदेल हवाना में, हजारों लोगों के सामने बेहोश हो गए थे. तीन साल बाद वो भाषण देने के बाद मंच से गिर गए जिससे उनका हाथ और घुटना टूट गया. 2006 में, सर्जरी के बाद, फिदेल ने सत्ता अपने भाई राउल को सौंप दी. उन्होंने कहा कि वो केवल एक अस्थायी व्यवस्था थी. बेहतर होते ही फिदेल देश चलाने के लिए वापस आएंगे. लेकिन 19 फरवरी, 2008 को इक्यासी साल की उम्र में फिदेल ने आधिकारिक रूप से इस्तीफा दे दिया. वो दुनिया के सबसे लंबे समय तक शासन करने वाले नेताओं में से एक थे.

अध्याय 12

हीरो या विलेन?

राउल के सत्ता संभालने के बाद फिदेल शायद ही कभी देखे गए. फिदेल के मरने की अक्सर अफवाहें फैलीं. जब भी ये अफवाहें उड़ीं, फिदेल ने यह सुनिश्चित किया कि उनकी तस्वीरें अखबारों या वेबसाइटों पर दिखाई दें. अप्रैल 2016 में, उन्होंने हवाना में क्यूबा की कम्युनिस्ट पार्टी की बैठक में भाग लिया. यह साफ था कि फिदेल बहुत कमजोर और बीमार थे.

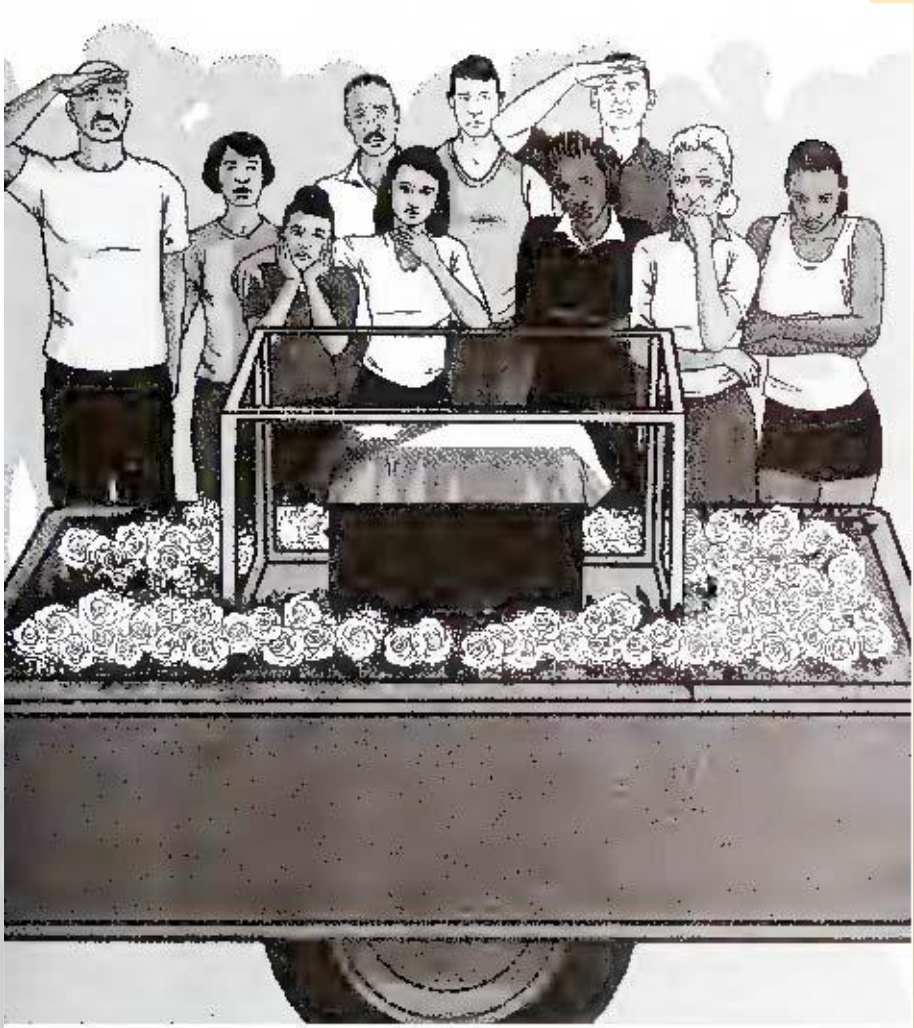

फिदेल की सात महीने बाद 25 नवंबर, 2016 को मृत्यु हो गई. वो नब्बे वर्ष के थे, पर फिर भी उनकी मृत्यु अभी भी एक सदमा थी. खासकर क्यूबा के लोगों के लिए. क्यूबा के इतने सारे नागरिकों के लिए, वे एकमात्र ऐसे नेता थे जिन्हें वे एक लम्बे अरसे से जानते थे. कई लोगों के लिए फिदेल, क्यूबा थे.

मृत्यु के बाद फिदेल किस तरह के व्यक्ति थे और उन्होंने क्यूबा के लिए क्या किया, इसके बारे में बहुत कुछ लिखा गया है. हाँ, वे एक बहादुर युवा नेता थे. लेकिन वो एक क्रूर तानाशाह भी थे और शासन उनके पूर्ण नियंत्रण में था. फिदेल ने हजारों राजनीतिक विरोधियों को जेल भेजा. उन्होंने देश में स्वतंत्र चुनाव या अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की अनुमति नहीं दी. फिदेल ने क्यूबा के लोगों को बेहतर स्कूल और चिकित्सा सेवाएं प्रदान की. फिर भी कई अन्य मायनों में उन्होंने वास्तव में गरीब क्यूबाई लोगों के जीवन में सुधार नहीं किया जैसा कि उन्होंने वादा किया था.

फिदेल हीरो थे या विलेन? इस प्रश्न का उत्तर इस पर निर्भर करता है कि आप यह प्रश्न किससे पूछते हैं. हो सकता है आपको वे हीरो या खलनायक लगें लेकिन क्यूबा, लैटिन अमेरिका और दुनिया पर उनका प्रभाव बहुत बड़ा था.

फिदेल का नाम इतिहास में अमर रहेगा.

फिदेल कास्त्रो के जीवन की समयरेखा

1926 - फिदेल कास्त्रो का जन्म 13 अगस्त को बिरान, क्यूबा के निकट हुआ

1933 - सैंटियागो, क्यूबा में ला-सैले बोर्डिंग स्कूल में पढ़ाई की

1940 - डोलोरेस अकादमी, सैंटियागो, क्यूबा में पढ़ाई की

1942 - हवाना, क्यूबा में बेलेन के जेसुइट प्रिपरेटरी स्कूल में पढ़ाई की

1945 - कानून का अध्ययन करने के लिए हवाना विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया

1950 - विश्वविद्यालय से स्नातक की पढ़ाई के बाद एक कानूनी कार्यालय खोला

1953 - एक असफल तख्तापलट का नेतृत्व करने के बाद उन्हें पंद्रह साल की जेल की सजा सुनाई गई

1956 - क्रांतिकारियों के एक दल के साथ मैक्सिको से क्यूबा के लिए समुद्री यात्रा की

1959 - क्यूबा सरकार को उखाड़ फेंका और फिर राष्ट्रपति फुलगेन्सियो बतिस्ता ने क्यूबा छोड़ दिया

1961 - अमेरिकी सैनिकों द्वारा बे ऑफ पिग्स का आक्रमण, फिदेल कास्त्रो को उखाड़ फेंकने में विफल रहा

1962 - सोवियत संघ ने क्यूबा मिसाइल संकट की शुरुआत करते हुए क्यूबा में परमाणु मिसाइलें लगाने की धमकी दी

1960 - क्यूबा के 1,25,000 शरणार्थी देश छोड़कर चले गए

2000 - इलियान गोंजालेज की क्यूबा में अपने पिता के पास वापसी के लिए संघर्ष

2005 - पाँच घंटे का भाषण दिया जिसमें उन्होंने बीमार होने से इनकार किया

2006 - अपने भाई राउल को सत्ता हस्तांतरित की

2008 - क्यूबा के राष्ट्रपति पद से इस्तीफा दिया और राउल को राष्ट्रपति नामित किया गया

2016 - 25 नवंबर को हवाना में निधन

दुनिया की समयरेखा

1929 ग्रेट डिप्रेशन यानि महामंदी के कारनअमेरिकी शेयर बाजार दुर्घटनाग्रस्त हुआ

1936 स्पेन में गृह युद्ध शुरू हुआ

1939 द्वितीय विश्व युद्ध शुरू हुआ, स्पेन का गृहयुद्ध समाप्त हुआ

1945 द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त हुआ

1949 पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना का गठन हुआ

1953 सोवियत संघ के नेता जोसेफ स्टालिन का निधन

1963 अमेरिकी राष्ट्रपति जॉन एफ. कैनेडी की हत्या कर दी गई

1981 पहली महिला, सैंड्रा डे ओ'कॉनर, अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट में नियुक्त हुईं

1991 रूस का पतन और विखंडन

1994 दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद की समाप्ति

2001 वर्ल्ड ट्रेड सेंटर और पेंटागन पर हमला

2008 बराक ओबामा अमेरिका के पहले अफ्रीकी अमेरिकी राष्ट्रपति चुने गए

2010 हैती में आए बड़े भूकंप में लाखों लोग मारे गए

2016 ओबामा का कहना है कि क्यूबा के साथ व्यापार प्रतिबंध हटा लिए जाने चाहिए

डोनाल्ड ट्रंप अमेरिका के राष्ट्रपति चुने गए